क्या दस हज़ार साल पहले युद्ध होते थे?

सन 2012 में पुरातत्ववेत्ताओं को केन्या में तुर्काना झील के निकट नतारुक में कुछ चीज़ें मिली थीं जो चिंता का विषय थीं - चिंता का विषय मानव इतिहास की हमारी समझ की दृष्टि से। इस पुरातत्व स्थल पर खुदाई के दौरान पुराविदों को 27 व्यक्तियों के अवशेष मिले थे। इन्हें दफनाया नहीं गया था और खुले में छोड़ दिया गया था। इनमें से 12 लगभग संपूर्ण कंकाल थे जबकि अन्य व्यक्तियों की बिखरी हुई हड्डियां मिली थीं।

जो कंकाल बेहतर संरक्षित हालत में मिले थे, उनकी जांच-पड़ताल के आधार पर पुरातत्वविदों का मत था इनमें से 10 हिंसक मौत मरे थे। पांच की मृत्यु किसी बोथरे हथियार से सिर पर लगी चोट के कारण हुई थी जबकि पांच किसी नुकीले औज़ार द्वारा सिर और गर्दन पर लगी चोट के शिकार हुए थे। यह नुकीला हथियार संभवतः तीर था। दो शवों के कंकाल की हालत बता रही थी कि मारने से पहले उन्हें बांध दिया गया था।

पुरातत्ववेत्ताओं का निष्कर्ष था कि यह दृश्य किसी संगठित युद्ध का प्रमाण था जिसमें एक समूह के लोगों ने किसी दूसरे समूह के लोगों को व्यवस्थित रूप से मौत के घाट उतारा था।

वैसे तो ऐसा हिंसक नरसंहार कोई अनहोनी घटना नहीं है मगर जिस काल में यह घटना घटी होगी वह सचमुच आश्चर्य की बात थी। नतारुक स्थल कम से कम 10 हज़ार साल पूर्व का है। इसकी काल गणना कंकालों और कंकालों के आसपास मिले अन्य जंतु अवशेषों के कार्बन डेटिंग, तथा वहां पाए गए औज़ारों के विश्लेषण के आधार पर की गई है। *नेचर* में प्रकाशित शोध पत्र के मुताबिक ये सारे प्रमाण दर्शा रहे थे कि यह नरसंहार 10 हज़ार वर्ष या उससे भी पहले हुआ था।

यह वह समय था जब मनुष्य प्रायः शिकारी या संग्रहकर्ता थे। संसाधनों के लिए आज के समान स्पर्धाएं नहीं थी। न ही आज की तरह संगठित कबीले थे। शोधकर्ताओं के मुताबिक इस तरह की घटना की दो ही व्याख्याएं हो सकती हैं। या तो नतारुक क्षेत्र में लोग एक जगह बसकर जीवनयापन करने लगे थे या संगठित युद्ध उससे भी पहले अवतरित हो चुका था। कौन-सी व्याख्या उपयुक्त है, यह तो और अनुसंधान से ही पता चल सकेगा। इस अध्ययन का नेतृत्व कर रहे मार्ता मिराज़न लह्र का अनुमान है कि हो सकता है कि किसी समय भोजन की उपलब्धता बढ़ी होगी, जिसकी वजह से समूहों की साइज़ बड़ी हुई होगी और संसाधनों पर दबाव आ गया होगा। ऐसी स्थिति में दूसरों का सामान चुराने वगैरह जैसी प्रवृत्तियों ने ज़ोर पकड़ा होगा और युद्ध हुए होंगे। बहरहाल, यह मात्र एक अनुमान है। या हो सकता है कि पूरे 'मौका-ए-वारदात' को एक भिन्न परिप्रेक्ष्य में देखने की ज़रूरत हो। ***(स्रोत फीचर्स)***